International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue 4; July 2017; Page No. 20-24

मणिपुरी भाषा की सामान्य विशेषताएँ

डॉ0 चान्दम इङो सिंह

पीएचडी, मणिपुर विश्वविद्यालय, इंफाल, मणिपुर, भारत

प्रस्तावना

मणिपुर भारत की उत्तर पूर्वी सीमा पर स्थित एक छोटा सा पर्वतीय राज्य है। इस के उत्तर में नागालैण्ड, दक्षिण में मिजोराम एवं पूर्व में म्यानमार देश है, पश्चिम में असम का कछार जिला है। मणिपुर में विभिन्न भाषा–भाषी अनेक जन–समुदाय के लोग रहते हैं। भौगोलिक दृष्टि से मणिपुर को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है। एक पर्वतीय भाग और दूसरा घाटी का भाग। घाटी का भाग मणिपुर राज्य का केन्द्रीय भाग है। जहाँ मैतै जाति के लोग बसते हैं। इस घाटी को घेरते हुए चारों तरफ पर्वतीय क्षेत्र फैले हुए हैं, जहाँ विभिन्न प्रकार की जन–जातियाँ बसती हैं। इनमें ताङखुल, कूकि, माओ, अनाल, पाइते, मरिङ, थादौ, मार, लियाङमै, चोथे, पाओमै, रोङमै, कोम, आइमोल, अंगामी, चीरू, गाङते, कोइरेङ, कोइराओ, लमगाङ, मराम, मिजो(लुसाई), मोनसाङ, मोयोन, पुरूम, रालते, सेमा, सीमते, सूहेता, वायफे, जौ, तराओ और कबुई, खारम और माते आदि जन–जातियाँ हैं। ये विभिन्न जन–जातियाँ मणिपुर के विभिन्न पहाड़ों में बसती हैं। इनकी अलग–अलग भाषाएँ हैं, जो एक दूसरे से पर्याप्त भिन्न है। विभिन्न जन–जातियों के बीच सम्प्रेषण का एक मात्र माध्यम मैतैलोन या मणिपुरी भाषा है। अतः मैतैलोन/मणिपुरी भाषा पूरे मणिपुर राज्य की सम्पर्क भाषा है। वस्तुतः यह भाषा मैतै जाति की भाषा है। मैतैलोन एक सामाजिक शब्द है– यह मैतै एवं लोन दो शब्दों से मिलकर बना है। 'मैतै' एक जाति विशेष का नाम है और 'लोन' का अर्थ है– भाषा। लेकिन अब यह भाषा मैतै जाति की ही नहीं है, वरन पूरे मणिपुरी राज्य की सम्पर्क भाषा है।

मणिपुरी भाषा तिब्बतो–बर्मन भाषा परिवार की एक भाषा है। तिब्बतो–बर्मन भाषाएँ मुख्यतः तान एवं प्रत्यय विधान (Affixiation) के कारण विश्व की अन्य भाषाओं से अलग अस्तित्व रखती हैं। इस भाषा परिवार में तान स्वनिम स्तर पर मिलता है, जिसके द्वारा अर्थ में व्यतिरेक पैदा होता है। एक प्रातिपदिक (Stem) पर कई प्रत्यय जुड़ सकते हैं, इन भाषाओं में प्रत्यय विधान तो होता है लेकिन इन प्रत्ययों के द्वारा शब्दों का वर्गीकरण नहीं किया जा सकता है। शब्दों का वर्गीकरण वाक्य स्तर पर होता है। आस्ट्रिन हॉले (Austin Hale) ने इस तिब्बतो–बर्मन भाषाई प्रवृत्ति को स्पष्ट करते हुए कहा है कि ''.....तिब्बतो बर्मन भाषाएँ सामान्यतः एकाक्षरिक होती है, इनमें प्रत्यय द्वारा निर्मित शब्दों के वर्गीकरण की अपेक्षा शब्दों का वर्गीकरण वाक्य स्तर पर किया जाता है।''

तिब्बतो बर्मन भाषा परिवार की भाषाएँ भारत में मुख्यतः असम, मणिपुर, नागालैण्ड, सिक्किम, मिजोरम, अरुणाचल प्रदेश, त्रिपुरा, मेघालय में खासी भाषा को छोड़कर बोली जाती है। इस भाषा परिवार की कई उपभाषाएँ भी हैं। भारतवर्ष में बोली जाने वाली चार परिवारों की भाषाओं में तिब्बतो बर्मन परिवार की भाषाओं का अपना विशेष महत्व है। इस भाषा परिवार को कई विद्वानों ने अलग–अलग ढंग से वर्गीकृत किया है। ये भाषा परिवार भारत में ही नहीं एशिया महादेश के दक्षिण में मध्य भाग में एवं पूर्वी दक्षिण में फैले हुए हैं। तिब्बतो बर्मन भाषा परिवार की सिनो तिब्बतन भाषा परिवार की एक उपशाखा है।

मणिपुरी भाषा के उद्भव एवं विकास

मणिपुरी भाषा को मैतैलोन भी कहते हैं। मैतैलोन का मतलब मैतै की भाषा है। ऐतिहासिक दृष्टि से देखने पर यह ज्ञात होता है कि ''मैतै'' जाति में भी और कई जातियाँ जुड़ी हुई है। आज की मैतै जाति सात कुलों (Clans) या जातियों का सम्मिलित रूप है। वे सात कुल निम्नलिखित हैं–

1. निङथौजा
2. मङाङ
3. चेङलइ
4. अङोम
5. खुमन
6. लुवाङ
7. मोईराङ

इस तरह से इन सात कुलों का सम्मिलित रूप मैतै है, सात बोलियों की सम्मिलित बोली मैतैलोन है अर्थात मणिपुरी भाषा थी। सन् 33 ई में निङथौजा कुल (मूल मैतै) का नोङदा लाइरेन पाखङबा नामक एक शक्तिशाली राजा हुए। उनके शासन काल से मणिपुर के सात कुलों को मिलाकर एक बड़ा राज्य मणिपुर बनाने का प्रक्रिया शुरू हो गया था। इस तरह बाद में इन सात कुलों के राज्यों को पूर्ण रूप से निङथौजा कुल के शासन के अन्दर मिला दिया गया। इन सात कुलों से बनी जाति का नाम मैतै कहलाए और उनकी भाषा को मैतैलोन यानी मैतै लोगों की भाषा कहलाए। इन सात कुलों से मैतै जाति बनने के इतिहास का लक्षण भाषा पर दिखाई पड़ती है। मणिपुरी भाषा में आज भी ऐसे अनेक युग्म शब्द प्रचलित है जो दो कुलों की भाषाओं के समानार्थी दो शब्दों से बने हो, जैसे– उचेक–यवा (पक्षी) (उचेक = निङथौजा शब्द + यवा = खुमन शब्द, पाम्बा–कै (बाघ) पाम्ब = निङथौजा शब्द + कै = खुमन शब्द आदि)।

मणिपुरी यानी मैतैलोन बहुत प्राचीन भाषा है। यह एक समृद्ध भाषा है। इस भाषा की अपनी लिपि है उस लिपि का नाम ''मैतै मयेक '' है अर्थात मैतै लिपि है। 2011 की जनगणना (Census Report) के अनुसार मणिपुरी बोलने वालों की संख्या 27,21,756 है। इनमें मणिपुरी को मातृभाषा के रूप में बोलने वालों की संख्या 60% है और मणिपुरी को सम्पर्क भाषा के रूप में यानी (द्वितीय भाषा के रूप में) प्रयोग करने वाली विभिन्न भाषा भाषी जन जातियों की संख्या 40% है।

मणिपुरी राज्य भाषा (State Language) के रूप में आठवीं शताब्दी से लेकर अब तक प्रयुक्त होती आई है। ब्रिटिश राज्य काल (1891–1947), राज्य भाषा के रूप में मणिपुरी का प्रयोग होता था। ब्रिटिश सम्राज्य की समाप्ति के बाद मणिपुर भारत में शामिल हो गया। भारत सरकार ने मणिपुर में इस भाषा की सामर्थ्य को देखकर मणिपुरी भाषा को राज्य भाषा (State Language) के रूप में इसका चयन किया। तब से मणिपुरी भाषा जिसको मैतैलोन भी कहते हैं, यह भाषा मणिपुर के प्रशासन कार्य एवं अदालत में प्रयोग होता आ रहा है।

मणिपुरी भाषा का मणिपुर में दसवीं कक्षा तक शिक्षा के माध्यम के

रूप में प्रयोग होता है। इस भाषा में लिखित साहित्य अन्य भारतीय भाषाओं के साहित्य (बंगला, हिन्दी, तमिल आदि) की भाँति समृद्ध है। मणिपुरी साहित्य में एम. ए. तक की पढ़ाई होती है। साथ ही कई विद्यार्थी इस भाषा के साहित्य (पुराने एवं आधुनिक) पर पीएच. डी. उपाधि के लिए अनुसंधान कार्य कर रहे हैं। सुनिति कुमार चटर्जी ने मणिपुरी की सम्पन्नता को देखते हुए कहा था कि ''..... .....तिब्बेतो बर्मन परिवार की भाषाओं में शायद नेवारी को छोड़कर मणिपुरी साहित्य की दृष्टि से सबसे महवपूर्ण भाषा है।'' उन्होंने अन्य जगह में फिर कहा था कि ''भारत में बोली जाने वाली तिब्बेतो बर्मन भाषाओं में सबसे समृद्ध भाषा मणिपुरी है।''

मणिपुरी भाषा के अन्तर्गत कई बोलियाँ आती हैं। मुख्यतः इन बोलियों में स्थान भेद के कारण बोलने के ढंग एवं शब्दावली के प्रयोग में ''मानक मणिपुरी'' से अन्तर मिलता है ''मानक मणिपुरी'' इम्फाल एवं इम्फाल के आसपास बोली जाती है। वास्तव में मानक मणिपुरी मानक बनने की प्रक्रिया में है इम्फाल बोली को पूरी तरह मानकता प्राप्त नहीं हुई । मणिपुरी भाषा की बोलियों का नामकरण जहाँ–जहाँ वे बोलियाँ बोली जाती है, उन्हीं जगहों का नाम लेकर किया जाता है जैसे –

1 ककचिङ बोली (यह ककचिङ नामक जगह के आसपास बोली जाती है।)
2 थाङग बोली (यह थङगा में बोली जाती है।)
3 फयेङ बोली (यह फयेङ में बोली जाती है।)
4 अन्द्रो बोली (यह अन्द्रो में बोली जाती है।)
5 कुम्बी बोली (यह कुम्बी में बोली जाती है।)
6 ङाइखोङ बोली (यह ङाइखोङ में बोली जाती है।)
7 मोइराङ बोली (यह मोइराङ में बोली जाती है।)
8 सेकमाइ बोली (यह सेकमाइ में बोली जाती है।)

इन बोलियों के अलावा मणिपुर के बाहर जो मणिपुरी भाषी रहते हैं इनकी भाषा में मानक मणिपुरी से अन्तर है। अतः इनकी भाषा को भी मणिपुरी की बोलियों के अन्तर्गत रखा जा सकता है। मणिपुरी को मातृभाषा के रूप में बोलने वाले जो मणिपुरी के बाहर रहते हैं उनकी संख्या करीब चार दशक पहले 5,86,000 थी। वे लोग असम के गुवाहाटी, कछार, शिवसागर, लखीमपुर, होजाइ में और उत्तर प्रदेश के मथुरा, वृन्दावन, राधाकुण्ड एवं पश्चिमी बंगाल के नवद्वीप में रहते हैं। भारत के बाहर विदेश में भी कुछ मणिपुरी रहते हैं, जैसे बांगला देश के ढाका, सिलेट, मैनमार के मन्दले, भामो, रेंगून, माइकियाना, कालेम्यो, तमु, समसोक, कलेवा, हैजाङ, मुँङनु, गिनगिन, स्वांजी, मोकलाई तेनानयुङ, हेमजादा, होमेलिक आदि।

मानक मणिपुरी की स्वनिम व्यवस्था

स्वनिम व्यवस्था के अन्तर्गत खण्डीय एवं खण्डेतर स्वनिम आते हैं। खण्डीय स्वनिम के अन्तर्गत स्वर स्वनिम एवं व्यंजन आते हैं। मणिपुरी भाषा के सन्दर्भ में खण्डेतर स्वनिमों के अन्तर्गत तान एवं संहिता आते हैं इन सब का विवरण संक्षिप्त रूप में यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है।

स्वर स्वनिम :

स्वर स्वनिमों का विवेचन मुख्य रूप से जीभ के भाग उसकी ऊँचाई एवं होठों की स्थिति के आधार पर किया जाता है। जीभ के भाग के आधार पर तीन प्रकार के स्वर बनते हैं, अग्र स्वर, मध्य स्वर और पश्च स्वर। जीभ की ऊँचाई के आधार पर उच्च, मध्य एवं निम्न स्वर बनते हैं। होठों की स्थिति के आधार पर गोलित, अगोलित, एवं उदासीन स्वर बनते हैं। मणिपुरी के मूल स्वर छह हैः–/अ/, /इ/, /उ/, /ए/, /ओ/, /आ/

मणिपुरी के मूल स्वरों को निम्नलिखित तालिका के माध्यम से प्रस्तुत किया जा सकता है।

मणिपुरी भाषा के मूल स्वर–स्वनिमों की तालिका

जीभ का भाग ⟶
जीभ की ऊँचाई ↓

	अग्र	मध्य	पश्च
उच्च	इ		उ
मध्य	ए	अ	ओ
निम्न		आ	

मूल स्वर–स्वनिमों का विवरण

मणिपुरी भाषा के सभी मूल–स्वर–स्वनिम शब्द के आदि, मध्य एवं अन्त में आ सकते हैं। जैसे–

	आदि	मध्य	अन्त
/अ/ –	अबोक(दादी)	सम (बाल)	चाब (खाना)
/आ/–	आसाम (असम)	काल (समय)	सा (जानवर)
/ए/ –	एनसाङ (तरकारी)	चेङ (चावल)	चे (कागज)
/ओ/–	ओबा (उलटी करना)	चोक (चॉक)	सो (चाबी)
/उ/ –	उचेक (चिड़िया)	खुल (बस्ती)	चु (गन्ना)
/इ/ –	इ (रक्त)	चिङ (पहाड़)	यारि(मजूड़ा)

मणिपुरी में छह संयुक्त स्वर (Dipthongs) मिलते हैं

/अ.इ/, /अ.उ/, /आ.इ/, /आ,उ/, /उ.इ/, /ओ.इ/

ऊपर के संयुक्त स्वरों को निम्नलिखित तालिका के माध्यम से स्पष्ट किया जा रहा है ःमणिपुरी संयुक्त स्वरों की तालिको

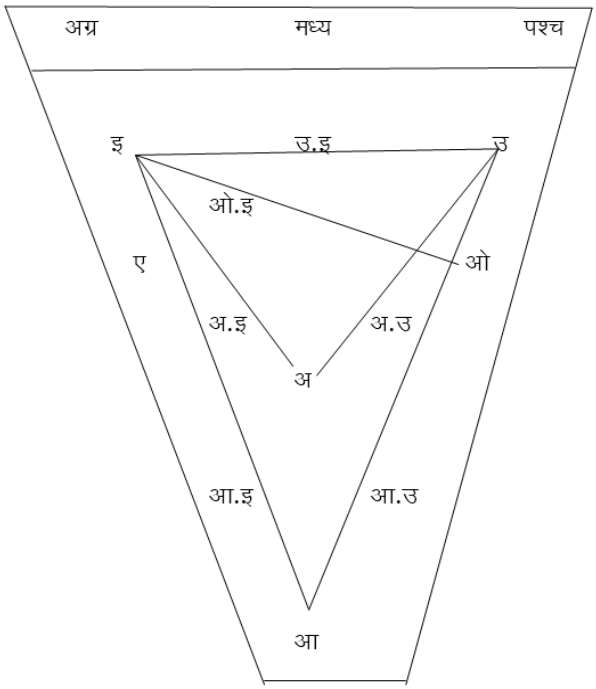

सभी संयुक्त स्वर स्वनिम स्तर पर पाए जाते हैं :–

अ.इ – म.इ (आग)
आ.इ – मा.इ (चेहरा)
अ.उ – म.उ (दुल्हन)
आ.उ – मा.उ (जगह विशेष का नाम)
उ.इ – उ.इब (ऊँघना)
ओ.इ – ओ.इबा (बनना)

मानक माणिपुरी व्यंजन स्वनिमों की तालिका

स्थान → / ↓ प्रयत्न		द्वयोष्ठ्य		वर्त्स्य		तालव्य		कंठय		काकल्य	
		अघोष	सघोष	अघोष	सघोष	अघोष	सघोष	अघोष	सघोष	अघोष	सघोष
स्पर्श	अल्प	प	ब<	त	द<			क	ग<		
	महा	फ	भ<	थ	ध<			ख	घ<		
स्पर्श संघर्षी	अल्प			च	ज<						
	महा			झ<							
नासिक्य	अल्प	म			न			ङ			
	महा										
पश्विक	अल्प				ल						
	महा										
लुंठित	अल्प				र<						
	महा										
संघर्षी	अल्प	फ<			स	श<				ह	
	महा										
अर्द्धस्वर	अल्प	व					य				
	महा										

< त्र आगत व्यंजन ध्वनियों के लिए

मानक मणिपुरी व्यंजनों का वितरण – आगत व्यंजनों में /ब/,/ग/,/द/,/ध/,/घ/ स्पर्श व्यंजन हैं। /ज/,/झ/स्पर्श संघर्षी हैं। /र/ लुंठित व्यंजन है। विशेषतया ये व्यंजन आगत शब्दों में मुख्य रूप से भारतीय आर्य परिवार के आगत शब्दों में पाए जाते हैं। जैसे –भूमि, सेबोक (सेवक), सेवा, बेभार (व्यवहार), भासा (भाषा), जात्रा (यात्रा), गारी (गाड़ी), राम, घोत (घट), दन्दी (दण्डी), गरभ (गर्भ), बालतिन (बाल्टी), झाल (करताल) आदि में । लेकिन, इनमें से कुछ व्यंजन ध्वनियों आधुनिक काल में अपने आप ही विकसित हो गई। जैसे खरा शब्द में /र/ 'करिगुम्ब' में /र/, /ग/, दोलाइ में /द/ आदि व्यंजनों का विकास बाद में हुआ। ये व्यंजन रूप स्वनिम परिवर्तन (Morpho-Phonemic Change) के फलस्वरुप कुछ व्यंजन ध्वनियों के संस्वन (Allophone) के रूप में पाये जाते है या विकसित होते हैं।

प– ब लम+ पाल = लमबाल (जंगली अरबी)
था+ पुम = थाबुम पूरा (महीना)
क– ग पाङ्+ कन = पाङ्गल (ताकत)
चु+ कुम = चुगुम (गन्ने का टुकड़ा)
त– द लम+ ता = लमदा (चेत्र महीना)
चिङ्+ तोन = चिङदोन (पहाड़ की चोटी)
च– ज चिङ्+ चाउ = चिङजाउ (पहाड़)
पाउ+ चेन = पाओजेल (खबर)

ऊपर के उदाहरणों से स्पष्ट है कि /ब/, /ग/, /द/, /ज/ व्यंजन /प/, /क/, /त/, एवं /च/ व्यंजन के संस्वन है। क्योंकि जब /प/, /क/, /त/, /च/ अघोष व्यंजन दो स्वरों के बीच या सघोष व्यंजनों के बीच आते हैं तब सघोष व्यंजन हो जाते हैं।

व्यंजन स्वनिमों का विवरण :

	आदि	मध्य	अन्त
/प/ –	परेङ (पंक्ति)	लमपाक (मैदान)	नप् (नाक)
/फ/ –	फउ(धान)	लफू (कदली)	––
/ब/ –	बिर (वीर)	माइब (वैद्य)	––
/भ/ –	भुमि (भूमि)	गर्भ (गर्भ)	––
/त/ –	तुपि (टोपी)	सातिन (छाता)	खुत (हाथी)
	ता (भाला)	कतन (आलस आदमी)	मित् (आँख)
/थ/ –	थक (एक कीड़ा का नाम)	इथक (लहर)	––

/द/ –	दान (दान)	आनन्द (नाम)	––
		सुन्दरी(नाम)	––
/ध/ –	धुप (धुप)	साधु (साधु)	––
		इधौ(दादा)	––
/क/ –	कोक (सिर)	चाकपा (जलना)	चाक (भात)
/ख/ –	खोइ (नाभि)	हैखा (आलू बुख़ार)	लाख् (लाख)
/ग/ –	गारी (गाड़ी)	सागै (कुल)	––
		सगोल (घोड़ा)	––
/घ/ –	घोट (घट)	––	––
	घरी (घड़ी)	––	––
/च/ –	चाक (भात)	मचा (बच्चा)	चम्मच् (चम्मच)
/ज/ –	जाति (जाति)	फजबा (सुन्दर)	मेज़ ् (मेज़)
/झ/ –	झाल(करताल)	––	––
/म/ –	मि(आदमी)	लमपाक (मैदान)	लम (जमीन)
/न/ –	नुपी (औरत)	खनबा (सोचना)	तेन (घनुष)
/ङ/ –	ङा (मछली)	मङा (पाँच)	काङ(मच्छर)
/न/ –	नुपी (औरत)	खनबा (सोचना)	तेन (भाषा)
/ल/ –	लाइरिक (किताब)	पाली (बारी)	लोल (भाषा)
/र/ –	रास (रास लीला)	खरा (थोड़ा)	कम्पोर (कम्बल)
/स/ –	सा(जानवार)	सेन (पैसा)	गिलास(ग्लास)
/ह/ –	हकचाङ (शरीर)	ऐहाक(मैं)	––
/व/ –	वा (बाँस)	थवाइ (आत्म)	––
/य/ –	या (दाँत)	मयोन (अंकुर)	––
	यारि(मसूड़ा)	मया (उसका दाँत)	––

मणिपुरी खण्डेतर स्वनिम :

मणिपुरी भाषा में दो ही प्रकार के खण्डेतर स्वनिम पाए जाते हैं : – तान (Tone) एवं संहिता (Juncture) तन – 'तान' तिब्बतो बर्मन भाषाओं की विशेषता हैं। इन भाषाओं में तान के द्वारा अर्थ भेद होता है। यहाँ तान स्वानिमिक स्तर पर मिलता है। वस्तुतः भाषा में तान (Tone) की उपस्थिति स्वराघात(Pitch) के अवरोही (falling rising) एवं आरोही(rising) रूपों के फलस्वरुप होती है। मणिपुरी में दो तान उपलब्ध होते हैं। एक तान है समतान (level tone) दूसरा अवरोही (falling tone) का प्रयोग ज्यादा होता है। समतान का कोई चिह्न नहीं है अवरोही (falling tone) का चिह्न /0/ है। दोनों तान शब्द के आदि, मध्य एवं अन्त स्थान आ सकते हैं। अवरोही (falling tone) की अपेक्षा समतान (level tone) का प्रयोग ज्यादा होता है। प्रत्ययों में तान (tone) का प्रयोग नहीं होता है।

	आदि	मध्य	अन्त
समतान	इ (एक विशेष की घास)	लाङ (जाल)	कि (डरना)
अवरोही	इ0(खून)	ला0ङ (शोर मचाना)	ि0क (बाँधना)
समतान	उन (बरफ)	लाक्पा (आना)	सि (मरना)
अवरोही	उ0न् (चमड़ा)	ला0कपा(नियन्त्रण में रखना)	ि0स(आरोप लगाना)

दूसरी खण्डेतर स्वनिम संहिता (Junction) है। मणिपुरी में संहिता पदबन्ध एवं वाक्य दोनों स्तरों पर मिलती है। पदबन्ध स्तर की संहिता का चिह्न /+/ है वाक्य स्तर का चिह्न /#/ है । संहिता की स्थिति दो है, एक मुक्त स्थिति और दूसरी युक्त स्थिति।

पदबन्ध स्तर संहिता

उदाहरण :

1 (क)युक्त संहिता – फकपियु (उखड़ दीजिए)
  (ख) मुक्त संहिता – फक + पियु(चटाई दो)
2 (क) युक्त संहिता – मुकपियु (चुनौती कीजिए)
  (ख) मुक्त संहिता – मुक + पियु(स्याही दो)

वाक्य स्तर पर संहिता

उदाहरण :

1 (क)# लाइरिक थिब # चत्लि । – पाठ करनेवाला जाता है।
  (ख)#लाइरिक# थिब चतलि । – किताब दूँढ़ने जाता है।
2 (क)#नङ मङोन्दा# मुकपिनु । – तुम उसे चुनौती मत दो।
  (ख)#नङ मङोन्दा मुक# पियु । – तु उसे स्याही दो।

मणिपुरी भाषा में प्रत्ययों की बड़ी भूमिका है। काल, पक्ष, वृत्ति, पुरुष, वचन आदि व्याकरणिक कोटियों की अभिव्यक्ति प्रत्ययों के द्वारा होता है। काल बोधक प्रत्यय –रम –ग, पक्ष बोधक प्रत्यय –ई,इ,ए, वृत्ति बोधक प्रत्यय –न, मिन्न, हत, ने, को, निङ, पन, पु, रो, रु आदि वचन बोधक प्रत्यय –शिङ –/मयाम के द्वारा होता है। निषेध की अभिव्यक्ति भी प्रत्यय द्वारा होता है। हिन्दी में निषेध की अभिव्यक्ति के लिए स्वतंत्र शब्द का प्रयोग होता है। मणिपुरी में स्वतंत्र शब्द का प्रयोग नहीं होता बल्कि प्रत्ययों के द्वारा होता है।

जैसे– हिन्दी में –

मैं नहीं जाऊँगी।
तुम मत आओ।

दोनों वाक्यों में 'नहीं' और 'मत' स्वतंत्र शब्द है। मणिपुरी में ऐसा प्रयोग नहीं है।

मणिपुरी में इस का प्रयोग इस प्रकार है –

1. ऐ चतलोइ।
2. नङ लाककनु।

यहाँ 'लोइ' और 'कनु' प्रत्यय हैं। ये निषेधात्मक प्रत्यय हैं।

शब्द वर्ग

मणिपुरी भाषा में मूलतः शब्द–मूल दो प्रकार के ही होते हैं। वे हैं– मुक्त और आबद्ध। सभी मुक्त मूल संज्ञा होते हैं। आबद्ध के फिर दो प्रकार होते हैं। वे हैं– संज्ञामूलक और क्रियामूलक। मणिपुरी में सभी क्रिया धातु आबद्ध होते हैं। मणिपुरी में संज्ञा को छोड़कर अन्य शब्द वर्गों का स्पष्ट रूप नहीं हैं। संज्ञा को छोड़कर अन्य शब्द वर्गों की रचना आबद्ध क्रिया मूल में संबंधित प्रत्ययों को जोड़कर की जाती हैं। जैसेः–'चा'(खा) क्रिया धातु में 'इ' क्रिया द्योतक प्रत्यय जोड़ने से 'चाइ'(खाता है) क्रिया शब्द बन जाता है। 'चा' में 'बा' संज्ञा द्योतक प्रत्यय जोड़ने से 'चाब'(खाना) क्रियार्थक संज्ञा बन जाता है। 'चाब' क्रियार्थक संज्ञा में विशेषण द्योतक प्रत्यय 'अ' जाड़ने से 'अचाब'(खानेवाला) विशेषण शब्द बन जाता है। इस प्रकार बाकि के अन्य शब्द वर्गों की रचना भी होती है। मणिपुरी शब्द–वर्ग विभाजन निम्न आरेख के द्वारा दिखाया जा रहा है–

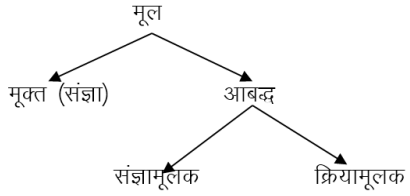

लिंग

मणिपुरी में व्याकरणिक लिंग नहीं है। मणिपुरी में केवल प्राकृतिक लिंग अर्थात प्राणिवाचक शब्दों का ही लिंग होता है। इस दृष्टि से मणिपुरी में भी दो प्रकार के लिंग होते हैं– 1. पुल्लिंग और 2. स्त्रीलिंग। जैसेः–

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
नुपा(पुरूष)	नुपि(स्त्री)
हुरानबा(चोर)	हुराबि(चोरनी)
इपा (पिता)	इमा(माता)
सन लाबा(बैल)	सन अमोम(गाय)

वचन

मणिपुरी भाषा में भी वचन दो प्रकार के होते हैं– 1. एकवचन और 2. बहुवचन। एकवचन से बहुवचन बनाने के लिए एकवचन शब्द में बहुवचन द्योतक प्रत्यय 'सिङ्' या 'खोय' जोड़ा जाता है। जैसेः–

एकवचन	बहुवचन
अङाङ्(बच्चा)	अङाङसिङ्(बच्चे)
लाइरिक(किताब)	लाइरिकसिङ्(किताबें)
ऐ (मैं)	ऐखोय (हम)
नङ (तू)	नखोय (तुम)
मा(वह)	मखोय (वे)

मणिपुरी में वचन को लेकर अन्विति नहीं है। जैसेः– 1. नुपामचा **चेली**।(लड़का दौड़ता है।) 2. नुपामचासिङ् **चेली**।(लड़के दौड़ते हैं।) स्पष्ट है वाक्य में क्रिया पर कर्ता के वचन का कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

पुरुष : पुरुष सर्वनाम से संबंधित है, मणिपुरी में भी यह तीन प्रकार के होते हैं। जैसेः–

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
1. उत्तम पुरुषः	ऐ	ऐखोय
2. मध्यम पुरुषः	नङ	नखोय
3. अन्य पुरुषः	मा / महाक	मखोय

मणिपुरी में पुरूष के आधार पर कर्ता और क्रिया के बीच अन्विति नहीं होती है। जैसे– ऐचत्ली(मैं जाता हूँ।), नङ् चत्ली(तुम जाते हो।), महाक चत्ली(वह जाता है।)

काल

काल क्रिया से संबंधित व्याकरणिक कोटि है। अंग्रजी, हिंदी आदि भाषाओं की तरह मणिपुरी भाषा में काल स्पष्ट नहीं है। मणिपुरी में भी इसके तीन भेद हो सकते हैं। जैसेः– 1. भूतकाल, 2. वर्तमान काल और 3. भविष्य काल। ये तीनों काल काल वाचक क्रियाविशेषण शब्दों के द्वारा व्यक्त होते हैं। जैसे– ऐ ङराङ् स्कूल चत्ली।(मैं कल स्कूल गया था।) ऐ ङसि स्कूल चत्ली।(मैं आज स्कूल जाता हूँ) ऐ हयें स्कूल चत्कनि।(मैं कल स्कूल जाऊँगा।) मणिपुरी भाषा में क्रियाओं के रूप वृत्तिवाचक तथा पक्षबोधक प्रत्ययों के द्वारा बनते हैं। '~ओ' (इसकेसंरूप–~रो, ~लो, ~ङो), ऊ(इसके संरूप– ~यु, ~लु, ~ङु, ~0), 'नू', 'सि' आदि मणिपुरी भाषा के वृत्तिबोधक प्रत्यय हैं। 'इ'(इसके संरूप– ~यी, ~वी, ~पी, ~मी, ~ङी) आदि अपूर्ण पक्षबोधक प्रत्यय हैं और 'ए'(इसके संरूप– ~रे, ~ले, ~मे, ~ङे) पूर्ण पक्षबोधक प्रत्यय हैं। इस प्रकार इन प्रत्ययों से बने क्रिया के कुछ रूप उदाहरण के तौर पर निम्न दिया जा रहा है–

वृत्ति बोधक प्रत्यय

'~ओ' –चाओ(खाओ), चत्लो(जााओ), पारो(पढ़ो), येंङो(देखो), आदि।
'~नू' –चानू(मत खा), पानू(मत पढ़), तौनू(मत कर) आदि।
'~मिन्न –चामिन्नसि (साथ खाये),थकमिन्नसि (साथ पिये) आदि।
'~सि' –चासि(खाये), थकसि(पिये), तौसि(करें) आदि।

पक्ष बोधक प्रत्यय

- **समान्यपक्षः**'~ई'–चाइ(खाता है), चतलि(जाता है), येंङि(देखता है) आदि।
- **सातत्य पक्ष :**'~इ'–चारि(खा रहा है), चतलि(जा रहा है), येङलि।
- **पूर्ण पक्ष :**'~ए'–चारे(खाया), चत्ले(गया), पारे(पढ़ा) आदि।

कारक

मणिपुरी में मूलतः कारक सात प्रकार के होते हैं। वे हैं–

1. कर्ता –0,ना – रामना (राम ने)
2. कर्म–0,बु–रामबु(रामको)
3. करण – ना कलमना(कलम से)
4. अपादान – दगी – कादगी(कमरे से)
5. सम्बंध – गी – रामगी(राम का)
6. अधिकरण–दा– युमदा(घरमें)
7. सम्बोधन – हो, हे – हो इमा! (ओ माँ!)

(टिप्पणी : मणिपुरी में सम्बोधन कारक को छोड़कर सभी कारक–परसर्ग संज्ञा शब्दों के साथ जुड़कर लिखा जाता है।)

संदर्भ सूचि

1. शर्मा, नन्दलाल : मैतैलोन, इम्फाल, 1969।
2. सिंह, एन. खेलचन्द्र :अरिबा मणिपुरी लोनगै, इम्फाल, 1976। अरिबा मणिपुरी साहित्यगी इतिहास, इम्फाल, 1967।
3. प्रो. ह. सुवदनी देवी: मणिपुरी भाषा और साहित्य, हिंदी परिषद,हिंदी विभाग, मणिपुर विश्वविद्याल, 2007।
4. Dr. G.A.: Linguistic Survey of India, Vol. I, Vol. III, Delhi, 1967.
5. Sharma, Nandalal : Manipuri Grammar, Imphal, 1987
6. Singh, N. Khelchandra: Manipuri Language, Status and Importance, Imphal, 1975.
   A Catalogue of old Manipuri MSS, Imphal, 1992.
7. Singh, W. Tomchou: A Study of Meitei Phonology, Imphal, 1976.
8. Manipuri Sahitya Parishad. 1970. Glimpses of Manipuri Languages, Literature and Culture. Imphal: Literary Circle of Manipur. Pp.36.
9. Directorate of Census, Government of Manipur. 2011. Census of India, 2011, Series – 15.